

सूरह मुमिनून - 23



सूरह मुमिनून के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 118 आयतें हैं।

- इस सूरह में ईमान वालों की सफलता तथा उन के गुणों को बताया गया है।
- और जिस आस्था पर सफलता निर्भर है उस के सत्य होने के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं। और संदेहों को दूर किया गया है।
- यह बताया गया है कि सब नबियों का धर्म एक था, लोगों ने विभेद कर के अनेक धर्म बना लिये।
- जो लोग अचेत हैं उन्हें सावधान करने के साथ साथ मौत तथा प्रलय के दिन उनकी दुर्दशा को बताया गया है।
- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के माध्यम से मुसलमानों को अल्लाह की क्षमा तथा दया के लिये प्रार्थना की शिक्षा दी गयी है।
- हदीस में है कि जिस में तीन बातें हों उसे ईमान की मिठास मिल जाती है: जिस को अल्लाह और उस के रसूल सब से अधिक प्रिय हों। और जो किसी से मात्र अल्लाह के लिये प्रेम करे। और जिसे यह अप्रिय हो कि इस के पश्चात् कुफ्र में वापिस जाये जब कि अल्लाह ने उसे उस से निकाल दिया। जैसे की उसे यह अप्रिय हो कि उसे नरक में फेंक दिया जाये। (सहीह बुखारी, 21, मुस्लिम, 43)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सफल हो गये ईमान वाले।
2. जो अपनी नमाज़ों में विनीत रहने वाले हैं।

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ
الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ

3. और जो व्यर्थ^[1] से विमुख रहने वाले हैं
4. तथा जो ज़कात देने वाले हैं।
5. और जो अपने गुप्तांगो की रक्षा करने वाले हैं।
6. परन्तु अपनी पत्नियों तथा अपने स्वामित्व में आयी दासियों से, तो वही निन्दित नहीं हैं।
7. फिर जो इस के अतिरिक्त चाहें, तो वही उल्लंघनकारी हैं।
8. और जो अपनी धरोहरों तथा वचन का पालन करने वाले हैं।
9. तथा जो अपनी नमाज़ों की रक्षा करने वाले हैं।
10. यही उत्तराधिकारी हैं।
11. जो उत्तराधिकारी होंगे फ़िर्दौस^[2] के, जिस में वे सदावासी होंगे।
12. और हम ने उत्पन्न किया है मनुष्य को मिट्टी के सार^[3] से।
13. फिर हम ने उसे वीर्य बना कर रख दिया एक सुरक्षित स्थान^[4] में।
14. फिर बदल दिया वीर्य को जमे हुये रक्त में, फिर हम ने उसे मांस का

وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُونَ ﴿١﴾

وَالَّذِينَ هُمْ لِلزَّكَاةِ فَاعِلُونَ ﴿٢﴾

وَالَّذِينَ هُمْ أَغْرُؤُوجُهُمْ حَقِيقُونَ ﴿٣﴾

إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٤﴾

فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ﴿٥﴾

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِنَتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ﴿٦﴾

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَواتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٧﴾

أُولَٰئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ ﴿٨﴾

الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرَادُوسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٩﴾

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِنْ سُلَالَةٍ مِنْ طِينٍ ﴿١٠﴾

ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نَظْفَةً فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ﴿١١﴾

ثُمَّ خَلَقْنَا النَّظْفَةَ عِلْقَةً فَخَلَقْنَا الْعِلْقَةَ مِضْغَةً ﴿١٢﴾

1 अर्थात् प्रत्येक व्यर्थ कार्य तथा कथन से। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जो अल्लाह और प्रलय के दिन पर ईमान रखता हो वह अच्छी बात बोले अन्यथा चुप रहे। (सहीह बुख़ारी, 6019, मुस्लिम, 48)

2 फ़िर्दौस: स्वर्ग का सर्वोच्च स्थान।

3 अर्थात् वीर्य से।

4 अर्थात् गर्भाशय में।

लोथड़ा बना दिया, फिर हम ने लोथड़े में हड्डियाँ बनायीं, फिर हम ने पहना दिया हड्डियों को मांस, फिर उसे एक अन्य रूप में उत्पन्न कर दिया। तो शुभ है अल्लाह जो सब से अच्छी उत्पत्ति करने वाला है।

15. फिर तुम सब इस के पश्चात् अवश्य मरने वाले हो।

16. फिर निश्चय तुम सब (प्रलय) के दिन जीवित किये जाओगे।

17. और हम ने बना दिये तुम्हारे ऊपर सात आकाश, और हम उत्पत्ति से अचेत नहीं^[1] हैं।

18. और हम ने आकाश से उचित मात्रा में पानी बरसाया, और उसे धरती में रोक दिया तथा हम उसे विलुप्त कर देने पर निश्चय सामर्थ्यवान हैं।

19. फिर हम ने उपजा दिये तुम्हारे लिये उस (पानी) के द्वारा खजूरों तथा अंगूरों के बाग, तुम्हारे लिये उस में बहुत से फल हैं, और उसी में से तुम खाते हो।

20. तथा वृक्ष जो निकलता है सैना पर्वत से जो तेल लिये उगता है। तथा सालन है खाने वालों के लिये।

21. और वास्तव में तुम्हारे लिये पशुओं में एक शिक्षा है, हम तुम्हें पिलाते हैं उस में से जो उन के पेटों में^[2] है।

فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظًا فَكَسَوْنَا الْعِظَ لَحْمًا ثُمَّ أَنْشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ فَبَارَكُ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ۝

ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَلِكَ لَمَيِّتُونَ ۝

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تُبْعَثُونَ ۝

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقَ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غَافِلِينَ ۝

وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَنَتْهُ فِي الْأَرْضِ ۝
وَأَنَّا عَلَىٰ ذَهَابٍ بِهِ لَقَادِرُونَ ۝

فَأَنْشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَنَّاتٍ مِّنْ نَّجِيلٍ وَأَعْنَابٍ لَّكُمْ فِيهَا فَاوَاكِهِ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝

وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُورِ سَيْنَاءَ تَنْبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِلْكَالِينَ ۝

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً لِّتُنْقِضُوا مِمَّا فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝

1 अर्थात् उत्पत्ति की आवश्यकता तथा जीवन के संसाधन की व्यवस्था भी कर रहे हैं।

2 अर्थात् दूध।

तथा तुम्हारे लिये उन में अन्य बहुत से लाभ हैं, और उन में से कुछ को तुम खाते हो।

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٢٢﴾

22. तथा उन पर और नावों पर तुम सवार किये जाते हो।

23. तथा हम ने भेजा नूह^[1] को उस की जाति की ओर, उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! इबादत (बंदना) अल्लाह की करो, तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है उस के सिवा, तो क्या तुम डरते नहीं हो?

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ لِقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهِ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٢٣﴾

24. तो उन प्रमुखों ने कहा जो काफिर हो गये उस की जाति में से, यह तो एक मनुष्य है, तुम्हारे जैसा, यह तुम पर प्रधानता चाहता है। और यदि अल्लाह चाहता तो किसी फरिश्ते को उतारता, हम ने तो इसे^[2] सुना ही नहीं अपने पूर्वजों में।

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُرِيدُ أَنْ يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً فَأَسْمِعْنَا هَذَا الْقَوْمَ الْآيَاتِ الْآوَّلِينَ ﴿٢٤﴾

25. यह बस एक ऐसा पुरुष है जो पागल हो गया है, तो तुम उस की प्रतीक्षा करो कुछ समय तक।

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ فْتَوَضَّعُوا لَهُ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٢٥﴾

26. नूह ने कहा: हे मेरे पालनहार! मेरी सहायता कर उन के मुझे झुठलाने पर।

قَالَ رَبِّ اجْنُوبْنِي بِمَا كَذَّبُونَ ﴿٢٦﴾

27. तो हम ने उस की ओर बह्यी की, कि नाव बना हमारी रक्षा में हमारी बह्यी के अनुसार, और जब हमारा

فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنْ اصْنَعْ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحَيْنَا إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنْزِيلُ فَاسْلُكْ

1 यहाँ यह बताया जा रहा है कि अल्लाह ने जिस प्रकार तुम्हारे आर्थिक जीवन के साधन बनाये उसी प्रकार तुम्हारे आत्मिक मार्ग दर्शन की व्यवस्था की और रसूलों को भेजा जिन में नूह अलैहिस्सलाम प्रथम रसूल थे।

2 अर्थात् एकेश्वरवाद की बात अपने पूर्वजों के समय में सुनी ही नहीं।

आदेश आ जाये तथा तन्नूर उबल पड़े, तो रख ले प्रत्येक (जीव) के एक-एक जोड़े तथा अपने परिवार को, उस के सिवा जिस पर पहले निर्णय हो चुका है उन में से, और मुझे संबोधित न करना उन के विषय में जिन्होंने अत्याचार किये हैं, निश्चय वे डुबो दिये जायेंगे।

28. और जब स्थिर हो जाये तू और जो तेरे साथी हैं नाव पर, तो कह: सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जिस ने हमें मुक्त किया अत्याचारी लोगों से।
29. तथा कह: हे मेरे पालनहार! मुझे शुभ स्थान में उतार, और तू उत्तम स्थान देने वाला है।
30. निश्चय इस में कई निशानियाँ हैं, तथा निःसंदेह हम परीक्षा लेने¹ वाले हैं।
31. फिर हम ने पैदा किया उन के पश्चात् दूसरे समुदाय को।
32. फिर हम ने भेजा उन में रसूल उन्हीं में से कि तुम इबादत (बंदना) करो अल्लाह की, तुम्हारा कोई (सच्चा) पूज्य नहीं है उस के सिवा, तो क्या तुम डरते नहीं हो?
33. और उस की जाति के प्रमुखों ने कहा जो काफिर हो गये तथा आखिरत (परलोक) का सामना करने को झुठला दिया, तथा हम ने उन्हें सम्पन्न किया था संसारिक जीवन में:

فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّهُمْ مُعْرِضُونَ ﴿٢٨﴾

وَإِذِ السَّوْيَاتِ أَنْتَ وَمَنْ مَعَكَ عَلَى الْفُلِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي بَجَدْنَا مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٢٩﴾

وَقُلْ رَبِّ أَرْزُقْنِي تَرْزُقًا وَبَرًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْمَرْزُقِينَ ﴿٣٠﴾

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ وَإِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ﴿٣١﴾

ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ﴿٣٢﴾

فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَهِ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣٣﴾

وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا الْآخِرَةِ وَآتَوْهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِمَّا هَدَى الْإِبْرَاهِيمَ مِثْلَكُمْ بِأَكْلِ مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَشْرَبُونَ مِمَّا تَشْرَبُونَ ﴿٣٤﴾

1 अर्थात् रसूलों के द्वारा परीक्षा लेते रहे हैं।

यह तो बस एक मनुष्य है तुम्हारे
जैसा, खाता है जो तुम खाते हो और
पीता है जो तुम पीते हो।

34. और यदि तुम ने मान लिया अपने
जैसे एक मनुज को तो निश्चय तुम
क्षतिग्रस्त हो।

35. क्या वह तुम को वचन देता है कि
जब तुम मर जाओगे और धूल तथा
हड्डियाँ हो जाओगे तो तुम फिर
जीवित निकाले जाओगे?

36. बहुत दूर की बात है जिस का तुम्हें
वचन दिया जा रहा है।

37. जीवन तो बस संसारिक जीवन है,
हम मरते-जीते हैं, और हम फिर
जीवित नहीं किये जायेंगे।

38. यह तो बस एक व्यक्ति है जिस ने
अल्लाह पर एक झूठ घड़ लिया है।
और हम उस का विश्वास करने
वाले नहीं हैं।

39. नबी ने प्रार्थना की: मेरे पालनहार!
मेरी सहायता कर उन के झुठलाने
पर मुझे।

40. (अल्लाह ने) कहा: शीघ्र ही वह (अपने
किये पर) पछतायेंगे।

41. अन्ततः पकड़ लिया उन्हें कोलाहल ने
सत्यानुसार, और हम ने उन्हें कचरा
बना दिया, तो दूरी हो अत्याचारियों
के लिये।

42. फिर हम ने पैदा किया उन के

وَلَكِنْ أَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذَا الْأَخْيَرُونَ ﴿٣٤﴾

أَيَعِدُّكُمْ أَنْتُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَعِظَامًا أَنْتُمْ تُخْرَجُونَ ﴿٣٥﴾

هِيَئَاتَ هِيَئَاتَ لِمَا تُوعَدُونَ ﴿٣٦﴾

إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٣٧﴾

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَمَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٣٨﴾

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَبْتُ ﴿٣٩﴾

قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لَيُصْبِحُنَّ نَدِيمِينَ ﴿٤٠﴾

فَاخَذَ اللَّهُمُ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ فَعَلَّاهُمْ غُشَاءً ﴿٤١﴾
مُبْعَدًا لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤٢﴾

ثُمَّ أَنشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُونًا آخَرِينَ ﴿٤٣﴾

पश्चात् दूसरे युग के लोगों को।

43. नहीं आगे होती है कोई जाति अपने समय से और न पीछे।^[1]

44. फिर हम ने भेजा अपने रसूलों को निरन्तर, जब जब किसी समुदाय के पास उस का रसूल आया, उन्होंने उस को झुठला दिया, तो हम ने पीछे लगा^[2] दिया उन के एक को दूसरे के और उन्हें कहानी बना दिया। तो दूरी है उन के लिये जो ईमान नहीं लाते।

45. फिर हम ने भेजा मूसा तथा उस के भाई हारून को अपनी निशानियों तथा खुले तर्क के साथ।

46. फिर औन और उस के प्रमुखों की ओर तो उन्होंने ने गर्व किया, तथा वे थे ही अभिमानी लोग।

47. उन्होंने ने कहा: क्या हम ईमान लायें अपने जैसे दो व्यक्तियों पर, जब कि उन दोनों की जाति हमारे आधीन है?

48. तो उन्होंने ने दोनों को झुठला दिया, तथा हो गये विनाशों में।

49. और हम ने प्रदान की मूसा को पुस्तक^[3], ताकि वह मार्ग दर्शन पा जायें।

50. और हम ने बना दिया मर्यम के पुत्र

مَائِثِينَ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٤٣﴾

ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرًا كُلَّمَا جَاءَ أُمَّةً رُسُلُهَا كَذَّبُوهُ فَاتَّبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثًا فَبُعَدَ الْقَوْمُ لَئِيْلُ الْمُؤْمِنُونَ ﴿٤٤﴾

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَى وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُبِينٍ ﴿٤٥﴾

إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا عَالِينَ ﴿٤٦﴾

فَقَالُوا أَأَتُونُكُمْ بِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عِبِيدُونَ ﴿٤٧﴾

فَلَدَّيْنَاهُمَا فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ ﴿٤٨﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّةً آيَةً وَآوَيْنَاهُمَا إِلَىٰ

1 अर्थात् किसी जाति के विनाश का समय आ जाता है तो एक क्षण की भी देर-सवेर नहीं होती।

2 अर्थात् विनाश में।

3 अर्थात् तौरात।

तथा उस की माँ को एक निशानी,
तथा दोनों को शरण दी एक उच्च
बसने योग्य तथा प्रवाहित स्रोत के
स्थान की ओर।^[1]

رَبُّو ذَاتِ قُرَارٍ مَّعِينٍ ﴿١﴾

51. हे रसूलो! खाओ स्वच्छ^[2] चीजों में
से तथा अच्छे कर्म करो, वास्तव में,
मैं उस से जो तुम कर रहे हो भली
भाँति अवगत हूँ।

يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوا مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَاعْمَلُوا الصَّالِحَاتِ
إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢﴾

52. और वास्तव में यह तुम्हारा धर्म एक
ही धर्म है और मैं ही तुम सब का
पालनहार हूँ, अतः मुझी से डरो।

وَأَنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ
فَاتَّقُونِ ﴿٣﴾

53. तो उन्होंने ने खण्ड कर लिया अपने
धर्म का आपस में कई खण्ड, प्रत्येक
सम्प्रदाय उसी में जो उन के पास^[3]
है मग्न है।

فَنَقَطَعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا كُلُّ حِزْبٍ بِمَا
لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٤﴾

54. अतः (हे नबी!) आप उन्हें छोड़ दें
उन की अचेतना में कुछ समय तक।

فَذَرُهُمْ فِي غَمَرَاتِهِمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٥﴾

55. क्या वे समझते हैं कि हम जो
सहायता कर रहे हैं उन की धन तथा
संतान से।

أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُسْقِيهِم مِّن تَالٍ وَنَسِينٍ ﴿٦﴾

56. शीघ्रता कर रहे हैं उन के लिये

نَسَارُهُمْ فِي الْخَيْرَاتِ بَلْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٧﴾

1 इस से अभिप्राय बैतुल मक्दिस है।

2 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: अल्लाह स्वच्छ है और स्वच्छ ही को स्वीकार करता है। और ईमान वालों को वही आदेश दिया है जो रसूलों को दिया है। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (संक्षिप्त अनुवाद, मुस्लिम: 1015)

3 इन आयतों में कहा गया है कि सब रसूलों ने यही शिक्षा दी है कि स्वच्छ पवित्र चीजें खाओ और सदाचार करो। तुम्हारा पालनहार एक है और तुम सभी का धर्म एक है। परन्तु लोगों ने धर्म में विभेद कर के बहुत से सम्प्रदाय बना लिये, और अब प्रत्येक सम्प्रदाय अपने विश्वास तथा कर्म में मग्न है भले ही वह सत्य से दूर हो।

भलाईयों में? बल्कि वह समझते नहीं हैं^[1]

57. वास्तव में जो अपने पालनहार के भय से डरने वाले हैं।

58. और जो अपने पालनहार की आयतों पर ईमान रखते हैं।

59. और जो अपने पालनहार का साझी नहीं बनाते हैं।

60. और जो करते हैं जो कुछ भी करें, और उन के दिल काँपते रहते हैं कि वे अपने पालनहार की ओर फिर कर जाने वाले हैं।

61. वही शीघ्रता कर रहे हैं भलाईयों में, तथा वही उन के लिये अग्रसर हैं।

62. और हम बोझ नहीं रखते किसी प्राणी पर परन्तु उस के सामर्थ्य के अनुसार। तथा हमारे पास एक पुस्तक है जो सत्य बोलती है, और उन पर अत्याचार नहीं किया^[2] जायेगा।

63. बल्कि उन के दिल अचेत हैं इस से, तथा उन के बहुत से कर्म हैं इस के सिवा जिसे वे करने वाले हैं।

64. यहाँ तक कि जब हम पकड़ लेंगे उन के सुखियों को यातना में, तो वे विलाप करने लगेंगे।

65. आज विलाप न करो, निःसंदेह तुम हमारी ओर से सहायता नहीं दिये जाओगे।

إِنَّ الَّذِينَ هُمْ مِنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُتَّقُونَ ﴿٥٧﴾

وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٨﴾

وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾

وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَاؤُا فُلُوبُهُمْ وَحِيلَةُ أَنَّهُمْ
إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ﴿٦٠﴾

أُولَٰئِكَ يُسْرِعُونَ فِي الْحَيَاتِ وَهُمْ لَهَا شَاقِقُونَ ﴿٦١﴾

وَلَا يَحْمِلُونَ فُسْأِلًا إِلَّا وَسْعَهَا وَلَدَيْنَا مَكْتُبٌ يَنْطِقُ
بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٢﴾

بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي غَمْرٍ مِنْ هَذَا وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِنْ
دُونِ ذَٰلِكَ هُمْ لَهَا عَامِلُونَ ﴿٦٣﴾

حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِمْ بِالْعَذَابِ إِذَا هُمْ
يَجْتَرُونَ ﴿٦٤﴾

لَا تَحْزَنُوا الْيَوْمَ ۖ إِنَّكُمْ مِنَّا لَا تُحْزَرُونَ ﴿٦٥﴾

1 अर्थात् यह कि हम उन्हें अवसर दे रहे हैं।

2 अर्थात् प्रत्येक का कर्म लेख है जिस के अनुसार ही उसे बदला दिया जायेगा।

66. मेरी आयतें तुम्हें सुनायी जाती रही तो तुम अपनी एड़ियों के बल फिरते रहे।
67. अभिमान करते हुये, उसे कथा बना कर बकवास करते रहे।
68. क्या उन्होंने ने इस कथन (कुर्आन) पर विचार नहीं किया, अथवा इन के पास वह^[1] आ गया जो उन के पूर्वजों के पास नहीं आया?
69. अथवा वह अपने रसूल से परिचित नहीं हुये, इस लिये वह उस का इन्कार कर रहे^[2] हैं?
70. अथवा वे कहते हैं कि वह पागलपन है? बल्कि वह तो उन के पास सत्य लाये हैं, और उन में से अधिकतर को सत्य अप्रिय है।
71. और यदि अनुसरण करने लगे सत्य उन की मनमानी का, तो अस्त-व्यस्त हो जाये आकाश तथा धरती और जो उन के बीच है, बल्कि हम ने दे दी है उन को उन की शिक्षा, फिर (भी) वे अपनी शिक्षा से विमुख हो रहे हैं।
72. (हे नबी!) क्या आप उन से कुछ (धन) माँग रहे हैं? आप के लिये तो आप के पालनहार का दिया हुआ ही उत्तम है। और वह सर्वोत्तम जीविका देने वाला है।

قَدْ كَانَتْ آيَاتِي تُنْزِلُ عَلَيْكُمْ فَلَنْتُمْ عَلَىٰ آعْقَابِكُمْ
تُنْكِرُونَ ﴿٦٦﴾

مُسْتَكْبِرِينَ تَكْبِرُ بِهِ سِيرَاتِهِمْ يُجْرُونَ ﴿٦٧﴾

أَفَلَمْ يَذْكُرُوا الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُمْ مَا لَمْ يَأْتِ آبَاءَهُمُ
الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾

أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ﴿٦٩﴾

أَمْ يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ بَلْ جَاءَهُمُ بِالْحَقِّ وَكَانُوا
لِلْحَقِّ كَافِرِينَ ﴿٧٠﴾

وَلَوْ أَتَبَعَ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ
وَمَنْ فِيهِنَّ بَلْ آتَيْنَاهُمْ مِنْكُمْ مِنْهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ
مُعْرِضُونَ ﴿٧١﴾

أَمْ سَأَلْتَهُمُ خَرْجًا فَقَالُوا بِكَ خَيْرٌ وَهُوَ خَيْرُ
الزَّرَاقِينِ ﴿٧٢﴾

1 अर्थात् कुर्आन तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आ गये। इस पर तो इन्हें अल्लाह का कृतज्ञ होना और इसे स्वीकार करना चाहिये।

2 इस में चेतावनी है कि वह अपने रसूल की सत्यता - अमानत तथा उन के चरित्र और वंश से भली भाँति अवगत हैं।

73. निश्चय आप तो उन्हें सुपथ की ओर बुला रहे हैं।
74. और जो आखिरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते वे सुपथ से कतराने वाले हैं।
75. और यदि हम उन पर दया कर दें और दूर कर दें जो दुःख उन के साथ है^[1] तो वह अपने कुकर्मों में और अधिक बहकते जायेंगे।
76. और हम ने उन्हें यातना में ग्रस्त (भी) किया, तो अपने पालनहार के समक्ष नहीं झुके और न विनय करते हैं।
77. यहाँ तक कि जब हम उन पर खोल देंगे कड़ी यातना के^[2] द्वार, तो सहसा वह उस समय निराश हो जायेंगे^[3]।
78. वही है जिस ने बनाये हैं तुम्हारे लिये कान तथा आँखें और दिल^[4], (फिर भी) तुम बहुत कम कृतज्ञ होते हो।
79. और उसी ने तुम्हें धरती में फैलाया है, और उसी की ओर एकत्र किये जाओगे।
80. तथा वही है जो जीवन देता और मारता है, और उसी के अधिकार में है रात्रि तथा दिन का फेर बदल, तो क्या तुम समझ नहीं रखते?

وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصَّوْءِ
لَنُكَذِّبَنَّ ۝

وَلَوْ جِئْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِنْ ضُرٍّ لَلْغَوَاءِ
طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝

وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُم بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوا لِرَبِّهِمْ
وَيَايَتَضَرَّعُونَ ۝

حَتَّىٰ إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيدٍ
إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ۝

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ
قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝

وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ
تُحْشَرُونَ ۝

وَهُوَ الَّذِي يُنْجِي وَيُمْسِكُ وَلَهُ اخْتِلَافُ اللَّيْلِ
وَالنَّهَارِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

1 इस से अभिप्राय वह अकाल है जो मक्का के काफिरों पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अवज्ञा के कारण आ पड़ा था। (देखिये, बुखारी: 4823)

2 कड़ी यातना से अभिप्राय परलोक की यातना है।

3 अर्थात् प्रत्येक भलाई से।

4 सत्य को सुनने-देखने और उस पर विचार कर के उसे स्वीकार करने के लिये।

81. बल्कि उन्होंने ने वही बात कही जो अगलों ने कही।

82. उन्होंने ने कहा: क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी तथा हड्डियाँ हो जायेंगे, तो क्या हम फिर अवश्य जीवित किये जायेंगे?

83. हम को तथा हमारे पूर्वजों को इस से पहले यही वचन दिया जा चुका है, यह तो बस अगलों की कल्पित कथायें हैं।

84. (हे नबी!) उन से कहो: किस की है धरती और जो उस में है, यदि तुम जानते हो?

85. वे कहेंगे कि अल्लाह की। आप कहिये: फिर तुम क्यों शिक्षा ग्रहण नहीं करते?

86. आप पूछिये कि कौन है सातों आकाशों का स्वामी तथा महा सिंहासन का स्वामी?

87. वे कहेंगे: अल्लाह है। आप कहिये: फिर तुम उस से डरते क्यों नहीं हो?

88. आप उन से कहिये कि किस के हाथ में है प्रत्येक वस्तु का अधिकार? और वह शरण देता है और उसे कोई शरण नहीं दे सकता, यदि तुम ज्ञान रखते हो?

89. वे अवश्य कहेंगे कि (यह सब गुण) अल्लाह ही के हैं। आप कहिये: फिर तुम पर कहाँ से जादू^[1] हो जाता है?

بَلْ قَالُوا مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُونَ ﴿١﴾

قَالُوا إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَأَنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿٢﴾

لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا هَذَا مِن قَبْلُ إِن هَذَا إِلَّا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣﴾

قُلْ لِّمَنِ الْأَرْضُ وَمَن فِيهَا إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤﴾

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٥﴾

قُلْ مَن رَّبُّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿٦﴾

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٧﴾

قُلْ مَن بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِزُّ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨﴾

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ فَأَنَّى تُعَذِّبُونَ ﴿٩﴾

1 अर्थात् जब यह मानते हो कि सब अधिकार अल्लाह के हाथ में है और शरण भी

90. बल्कि हम ने उन्हें सत्य पहुँचा दिया है, और निश्चय यही मिथ्यावादी हैं।

91. अल्लाह ने नहीं बनायी है अपनी कोई संतान, और न उस के साथ कोई अन्य पूज्य है। यदि ऐसा होता तो प्रत्येक पूज्य अलग हो जाता अपनी उत्पत्ति को ले कर, और एक-दूसरे पर चढ़ दौड़ता। पवित्र है अल्लाह उन बातों से जो यह लोग बनाते हैं।

92. वह परोक्ष (छुपे) तथा प्रत्यक्ष (खुले) का ज्ञानी है, तथा उच्च है उस शिर्क से जो वे करते हैं।

93. (हे नबी!) आप प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार! यदि तू मुझे वह दिखाये जिस की उन्हें धमकी दी जा रही है।

94. तो मेरे पालनहार! मुझे इन अत्याचारियों में सम्मिलित न करना।

95. तथा वास्तव में हम आप को उसे दिखाने पर जिस की उन्हें धमकी दे रहे हैं अवश्य सामर्थ्यवान हैं।

96. (हे नबी!) आप दूर करें उस (व्यवहार) से जो उत्तम हो बुराई को। हम भली भाँति अवगत हैं उन बातों से जो वे बनाते हैं।

97. तथा आप प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण माँगता हूँ, शैतानों की शंकाओं से।

بَلْ أَتَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَهُمْ لَكَذِبُونَ ﴿٩٠﴾

مَا اخَذَ اللَّهُ مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ إِلَهٍ إِذْ أَذْهَبَ كُلَّ إِلَهٍ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَّ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ سُبْحَنَ اللَّهُ عَمَّا يُصِفُونَ ﴿٩١﴾

عَلِيمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعَلَّى عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٩٢﴾

قُلْ رَبِّ إِنَّمَا تُرِيدُنِي مَا يُوعَدُونَ ﴿٩٣﴾

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٩٤﴾

وَإِنَّا عَلَىٰ أَنْ نُثَبِّتَ مَا نَعِدُهُمْ لَقَدِيرُونَ ﴿٩٥﴾

إِذْ نَعَمْ بِالَّذِي هِيَ أَحْسَنُ السَّيِّئَةِ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ﴿٩٦﴾

وَقُلْ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيْطَانِ ﴿٩٧﴾

वही देता है तो फिर उस के साझी कहाँ से आ गये। और उन्हें कहाँ से अधिकार मिल गया?

98. तथा मैं तेरी शरण माँगता हूँ, मेरे पालनहार! कि वह मेरे पास आयें।

99. यहाँ तक कि जब उन में किसी की मौत आने लगे तो कहता है: मेरे पालनहार! मुझे (संसार में) वापिस कर दे।^[1]

100. संभवतः मैं अच्छा कर्म करूँगा, उस (संसार में) जिसे छोड़ आया हूँ। कदापि ऐसा नहीं होगा। वह केवल एक कथन है जिसे वह कह रहा^[2] है। और उन के पीछे एक आड़^[3] है उन के पुनः जीवित किये जाने के दिन तक।

101. तो जब नरसिंघा में फूँक दिया जायेगा, तो कोई संबंध नहीं होगा उन के बीच उस^[4] दिन और न वे एक दूसरे को पूछेंगे।

102. फिर जिस के पलड़े भारी होंगे, वही सफल होने वाले हैं।

103. और जिस के पलड़े हल्के होंगे, तो उन्होंने ने ही स्वयं को क्षतिग्रस्त कर लिया, जो नरक में सदावासी होंगे।

104. झुलस देगी उन के चेहरों को अग्नि तथा उस में उन के जबड़े (झुलस कर) बाहर निकले होंगे।

وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَنْ يَحْضُرُونِ ۝

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُونِ ۝

لَعَلِّي أَعْمَلُ صَالِحًا فِيمَا تَرَكْتُ كَلَّا إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا وَمِنْ وَرَائِهِمْ بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝

فَإِذَا نْفَخَ فِي الصُّورِ فَلَا أَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ۝

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ۝

تَلْفَحُ وُجُوهُهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ ۝

1 यहाँ मरण के समय काफिर की दशा को बताया जा रहा है। (इब्ने कसीर)

2 अर्थात् उस के कथन का कोई प्रभाव नहीं होगा।

3 आड़ जिस के लिये बर्जख शब्द आया है, उस अवधि का नाम है जो मृत्यु तथा प्रलय के बीच होगी।

4 अर्थात् प्रलय के दिन उस दिन भय के कारण सब को अपनी चिन्ता होगी।

105. (उन से कहा जायेगा): क्या जब मेरी आयतें तुम्हें सुनायी जाती थीं तो तुम उन को झुठलाते नहीं थे?
106. वे कहेंगे: हमारे पालनहार! हमारा दुर्भाग्य हम पर छा गया^[1], और वास्तव में हम कुपथ थे।
107. हमारे पालनहार! हमें इस से निकाल दे, यदि अब हम ऐसा करें तो निश्चय हम अत्याचारी होंगे।
108. वह (अल्लाह) कहेगा: इसी में अपमानित हो कर पड़े रहो, और मुझ से बात न करो।
109. मेरे भक्तों में एक समुदाय था जो कहता था कि हमारे पालनहार! हम ईमान लाये। तू हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर, और तू सब दयावानों से उत्तम है।
110. तो तुम ने उन का उपहास किया, यहाँ तक कि तुम को मेरी याद भुला दी, और तुम उन पर हँसते रहे।
111. मैं ने उन को आज बदला (प्रतिफल) दे दिया है उन के धैर्य का, वास्तव में वही सफल हैं।
112. (अल्लाह) उन से कहेगा: तुम धरती में कितने वर्ष रहे?
113. वे कहेंगे: हम एक दिन या दिन के कुछ भाग रहे। तो गणना करने वालों से पूछ लें।

أَلَمْ تَكُنْ آتِيَنِي تُسَلِّي عَلَيَّكُمْ فَلَنتُمْ بِهَا
تُكْذِبُونَ ۝

قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا
ضَالِّينَ ۝

رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ۝

قَالَ اخْسَوْا مِنِّي وَلَا تَكَلُمُونِ ۝

إِنَّهُ كَانَ قَرِيْنٌ مِّنْ عِبَادِي يَقُولُ رَبَّنَا
امْنًا فَاعْفُ رِلْنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ
الرَّحِيْمِيْنَ ۝

فَاتَّخَذَتْهُمْ سَخِرًا حَتَّى اسْوَوْا لِيَوْمِ
وَكُنْتُمْ مِنْهُمْ تَضْحَكُونَ ۝

إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا أَلَهُمْ هُمُ
الْفَائِزُونَ ۝

قُلْ كَمْ لِيْسْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ۝

قَالُوا الْبَيْتَانِ يَوْمًا أَوْ بَعْضُ يَوْمٍ فَمَسَّلِ
الْعَادِيْنَ ۝

1 अर्थात् अपने दुर्भाग्य के कारण हम ने तेरी आयतों को अस्वीकार कर दिया।

114. वह कहेगा: तुम नहीं रहे परन्तु बहुत कम! क्या ही अच्छा होता कि तुम ने (पहले ही) जान लिया^[1] होता।
115. क्या तुम ने समझ रखा है कि हम ने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है और तुम हमारी ओर फिर नहीं लाये^[2] जाओगे?
116. तो सर्वोच्च है अल्लाह वास्तविक अधिपति। नहीं है कोई सच्चा पूज्य परन्तु वही महिमावान अर्श (सिंहासन) का स्वामी।
117. और जो (भी) पुकारेगा अल्लाह के साथ किसी अन्य पूज्य को जिस के लिये उस के पास कोई प्रमाण नहीं, तो उस का हिसाब केवल उस के पालनहार के पास है, वास्तव में काफिर सफल नहीं^[3] होंगे।
118. तथा आप प्रार्थना करें कि मेरे पालनहार! तू क्षमा कर तथा दया कर, और तू ही सब दयावानों से उत्तम (दयावान्) है।

قُلْ إِنْ لَيْسَ لَكُمْ إِلَّا قَلِيلٌ مِّنْكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١٤﴾

أَفَصَبْتُمْ أَنَّهَا خَلَقْنَاكُمْ عَشَا وَالْأَوَّلُ عَلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾

فَتَعَلَى اللَّهِ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ﴿١١٦﴾

وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿١١٧﴾

وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿١١٨﴾

1 आयत का भावार्थ है कि यदि तुम यह जानते कि परलोक का जीवन स्थायी है तथा संसार का आस्थायी तो आज तुम भी ईमान वालों के समान अल्लाह की आज्ञा का पालन कर के सफल हो जाते, और अवज्ञा तथा दुराचार न करते।

2 अर्थात् परलोक में।

3 अर्थात् परलोक में उन्हें सफलता प्राप्त नहीं होगी, और न मुक्ति ही मिलेगी।